REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 6 | MARCH - 2022

भारतीय महिलाओं का स्वास्थ्य संबंधित चुनौतियाँ का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Prof. B. B. Gohil
Associate Professor
Smt. B. V. Dhanak Arts, Commerce, Science and Management College
Bagasara (Dist. Amreli)

सारांश

आज वर्त्तमान भूमंडलीकरण एवं सूचना क्रांति के दौर में विश्व की आधी–आबादी जड़ परम्पराओं से जकड़ी हुई है। विकास का लाभ अभी तक आधी आबादी तक नहीं पहुँच पाई है, फलस्वरूप लैगिक विषमता आज भी जड़ जमाए हुई है। इस दौर में महिलाओं के समक्ष विभिन्न तरह की चुनौतियाँ विद्यमान है। सामाजिक एवं जैविक संरचना के कारण महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ प्रबल रूप से मुखर हो गयी है।

मूल शब्द (Key Words): भूमंडलीकरण, लैंगिक विषमता, स्वास्थ्य ग्रामीण परम्परा, जनसंख्या

प्रस्तावना

आज विश्व की आबादी 6 अरब से भी अधिक है। आबादी का आध हिस्सा महिलाओं का है। आधी दुनिया की आबादी आज वकास की दौड़ से काफी पीछे हो गई है। आज विकसित से लेकर विकासशील एवं गरीब राष्ट्र में महिलाओं की दशा दयनीय है। ''आदिम समाज से लके र आद्यै ोगिक समाज तक में महिलाओं को उचित सम्मान और स्थान नहीं दिया गया। आज के इस पूँजीवादी अर्थव्यवसथा में लगातार हर काम की एक कीमत देखी जाती है आज विकसित राष्ट्रों में वेश्यावृति को एक सामाजिक बुराई न मानकर कानूनी वैधता प्रदान कर दी गयी है और वेश्यावृति को जीवनयापन का एक धंधा माना जाा है।''

महिलाओं की जो स्थिति भारत एवं पूरी दुनिया में है वही स्थिति गुजरात के अमरेली जिला के ग्रामीण समुदाय में है। अमरेली जिला के महिलाओं की समस्याओं में प्रमुख समस्या की स्वास्थ्य के संदर्भ में है।

प्रस्तुत शोध–पत्र अमरेली जिला के ग्रामीण समुदाय में स्वास्थ्य की दशाओं का सामाजिक वैज्ञानिक संदर्भ से संबंधित है। ग्रामीण समाज में विभिन्न वर्ग तथा समुदाय के लोग निवास करते हैं। इनका वर्गीकरण आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, लिंग, उम्र आदि के आधर पर किया जा सकता है। ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार से लेकर एकल परिवार तक पाये जाते हैं। संयुक्त तथा एकल परिवारों में स्वास्थ्य समस्याओं में भिन्नताएँ हैं। इन भिन्नताओं के कारण सामाजिक ढाँचे में भी भिन्नताएँ उत्पन्न हो जाती है।

ग्रामीण समाज में व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्वास्थ्य की समस्याओं के कारण अनके रोग उत्पन्न हो जाते हैं। यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि ग्रामीण समाज में खासकर महिलाएँ स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक लापरवाह हैं तथा उनके अंदर रोग संबंधित अनेकों अंधविश्वास व्याप्त हैं। कुछ ग्रामीण रोग निदान के लिए अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति का सहारा लेते हैं जबकि कुछ में यह अंधविश्वास फैली हुई है कि यह रोग दैविक प्रकोप या जादूई प्रकोप के कारण हुआ है। यही कारण है कि कुछ लोग चिकित्सकों से किसी रोग का उपचार

कराते हैं तो कुछ लोग देवी–देवताओं की पूजा करते हैं तथा ओझाओं से झाड़–फूँक करवाते हैं। अमरेली के ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य संस्कृति के प्रति जागरूकता है या नहीं। ग्रामीण समाज में अधिकांश लोग रोगग्रस्त होने के प्रारम्भिक अवस्था में इलाज कराना आवश्यक नहीं समझते। यह भी देखा गया है कि असाध्य रोग के लिए भी वे घरेलू उपचारों पर निर्भर करते हैं। जब रोग बहुत ज्यादा बढ़ जाता है तो लाचार होकर वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति को अधिग्रहण करने का प्रयास करते हैं। सिर्फ आर्थिक कारण ही इसके लिए जिम्मेवार नहीं है बल्कि उपचार के संबंध में अपनी आदत को ही जीवन पद्धति बना लेते हैं।

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य की समस्या तथा उससे संबंधित विश्लेषण समाजशास्त्रीय अनुसंधान का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। किसी भी शोध–पत्र को प्रस्तुत करने की कुछ निर्धारित और प्रतिष्ठित अध्ययन विधियाँ होती है। यही विधि आगे चलकर प्राकृतिक या सामाजिक सिद्धांत बन जाते हैं।

दुनिया की वस्तुओं को दो भागों में बाँटा जाता है–सजीव और निर्जीव। सजीव वस्तुओं में मानव का स्थान सर्वोपरि है। मानव एक मननशील एवं चिन्तनशील प्राणी है। मानव व्यवहार और उनके द्वारा बनाए गए विविध सगठनों की संरचना, प्रकृति और परिवर्तन की व्याख्या सामाजिक विज्ञान को दूसरे विज्ञान से अलग करती है। निर्जीव वस्तुओं की व्याख्या सामाजिक तथ्यों की अपेक्षा आसान है। अतः प्राकृतिक विज्ञान में प्रयोगशाला विधि को प्राथमिकता दी जाती है। इसके विपरीत सामाजिक विज्ञानों का विषय–वस्तु जटिल होता है। इसलिए सामाजिक विज्ञान प्रायः वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि विषय–वस्तु के स्वभाव पर अध्ययन विधि का चयन निर्भर करता है। सभी प्रकार के तथ्यों की व्याख्या एक ही अध्ययन विधि से संभव नहीं है। विषय वस्तु में परिवर्तन के साथ अध्ययन विधि भी बदल जाता है। अध्ययन विधि कई प्रकार के हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

1. तार्किक अध्ययन विधि
2. ऐतिहासिक अध्ययन विधि
3. वैज्ञानिक अध्ययन विधि
4. तुलनात्मक अध्ययन विधि।

वर्तमान शोध–पत्र अमरेली के ग्रामीण महिला स्वास्थ्य समस्याओं पर आधारित है। समग्र के रूप में गुजरात की राजधानी अमरेली जिला के ग्रामीण समुदाय को चुना गया है। इस समग्र में से देव निदर्शन पद्धति के आधार पर 40 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है, जो विभिन्न वर्गो तथा स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रस्तुत शोध में अमरेली जिला के ग्रामीणों का स्वास्थ्य समस्याओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। अमरेली नगर एक ओर परम्परागत हिन्दू मूल्यों से ओत–प्रोत है क्योंकि अनके ग्रामीण अमरेली नगर में अपने ग्रामीण परम्पराओं का लेकर प्रवास किये हुए हैं तो दूसरी ओर इस शहर में शिक्षा, व्यवस्था तथा उद्योग का अभाव है। क्यों कि यहाँ पर अमरेली शहर गुजरात की राजधानी है इसलिए अमरेली को राजनीतिक केन्द्र भी कहा जा सकता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में उत्तरदाताओं के रूप में शिक्षित–अशिक्षित, धनी–गरीब, दोनों प्रकार की ग्रामीण उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। यह इसलिए ताकि स्पष्ट पता चले कि आर्थिक आधार के साथ–साथ शैक्षिक आधार पर ग्रामीण स्वास्थ्य की क्या समस्याएँ रही है। अध्ययन का आधार यह भी रहा है कि वर्ग स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी विश्वास एवं व्यवहार क्या रहा है।

''आज महिलाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या उनके स्वास्थ्य को लेकर है चाहे एड्स हो या कालाजार, मलेरिया और प्रसूति संबंधी बीमारियाँ, महिलाएँ सबसे ज्यादा पीड़ित हैं।'' आज भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। अशिक्षा, गरीबी और अज्ञानता कहीं–न–कहीं इनके पीछे खड़ी है। सरकार ने महिलाओं को प्रसूति लाभ संबंधी विभिन्न सहयोग कार्यक्रमों के माध्यम से इन गरीब महिलाओं अर्थात् जननियों को सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है। पहले से चल रही राष्ट्रीय प्रसूति लाभ योजना को जननी सुरक्षा योजना नामक नई योजना के नाम पर नया रूप दिया गया है। मई 2005 से प्रारंभ इस योजना के माध्यम से स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रसव सुविध प्रदान कर मातृ मृत्यु–दर और शिशु मातृ मृत्यु–दर को कम करने का प्रयास किया जायेगा।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र में अधिक मातृ मृत्युदर के अनेक कारण हैं। यही स्थिति अमरेली जिला के महिलाओं के भी साथ है। यहाँ भी महिलाओं के मृत्यु दर में सर्वाधिक अनुपात मातृ मृत्यु–दर है। इसमें सबसे बड़ा कारण रक्तस्त्राव है जो प्रसव के दौरान होता है। अमरेली जिले में रक्तस्त्राव के कारण एक–तिहाई मृत्यु होती है। इसके बाद नंबर आता है 'यूरपेरल और बाधित प्रसव का जिसके कारण समस्त मातृ मृत्यु का एक चौथाई भाग काल के ग्रास में समा जाता है। रक्तालपता के कारण 19 प्रतिशत मौतें आती हैं। गर्भपात और विशाक्तता से क्रमशः 9 प्रतिशत और 8 प्रतिशत महिलाओं का जीवन समाप्त हो जाता है।

भारत में मातृ मृत्यु–दर राष्ट्रीय पटल पर बिखरें विभिन्न राष्ट्रों से बहुत अध्कि है। मातृ मृत्यु दर का औसत भारतीय स्तर पर जो है उस औसत से भी अधिक गुजरात का औसत बड़ा है। अमरेली जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में कुष्ठ एवं चर्म रोगों से ग्रसित महिलाए ँ भी हैं। ऐसी महिलाओं को समाज से बहिष्कृत भी किया जा सकता है एवं उनके इलाज में भी काफी ढिलाई बरती जाती है। उनका इलाज ग्रामीण इलाकों में मुख्यतः परम्परागत तरीके से ही किया जाता है। लेकिन सरकार के अत्यधिक जागरूकता के कारण कुष्ठ जसै रोगों पर बहुत हद तक नियंत्रण किया जा रहा है।

अखिल भारतीय स्तर पर वर्ष 2004–05 के दौरान कुष्ठ रोग के कुल 2.60 मिलियन नए मामले सामने आये जिनमें 13.3 प्रतिशत बच्चे थे। अर्थात् वे नन्हें मासूम जिनके सामने अभी समूचा जीवन बचा है। 35.8 प्रतिशत रोगी महिलाएँ थी।

अमरेली ग्रामीण क्षेत्रों में क्षय रोग एक बड़ी समस्या के रूप में स्थापित है। गुजरात सरकार एवं केन्द्रीय सहायता प्राप्त कार्यक्रमों के बावजूद क्षय रोगियों की संख्या में कमी नहीं आ रही ह ै गाँवों में विभिन्न प्रकार की लकड़ियों का ईंधन के रूप में प्रयोग करने से महिलाओं में श्वास–जनित बीमारियाँ फैली हुई है। बलगम की जाँच का मौका इन कामकाजी महिलाओं को नहीं मिल पाता जिससे यह रोग दिन–ब–दिन फैलता जाता है।

''देश की लगभग 95 प्रतिशत जनसंख्या को जैंट्स नीति के अन्तर्गत लाया गया है। सन् 2004 तक 11 लाख 87 हजार रोगी उपचार के दायरे में आए। कुल 8,85,026 रोगियों की जान इस कार्यक्रम के द्वारा बचाई जा चुकी है। तीव्रता का आलम यह है कि यहाँ 2004 में कार्यक्रम 70 प्रतिशत वैश्विक औसत को भी पीछे छोड़ दिया हैं।''

आजकल देश में एड्स नामक बीमारी अपना भयावह रूप दिखा रही ह ै वास्तव में एड्स कोई एक बीमारी न होकर बीमारियों का समुच्चय है। दश्े ा में महिलाओं में एच.आई.वी. / एड्स का फैलना गहन चिन्ता का विषय है। विशेषकर जब समुदाय के सर्वाधिक कमजोर वर्गों की महिलाएँ संक्रमित पुरुष से संक्रमित होती है। महिलाओं में संक्रमण का होना अब सिर्फ व्यावसायिक गतिविधियों से ही नहीं अपितु वैवाहिक जीवन में भी एड्स अपनी घुसपैठ कर रहा है। एड्स से पीड़ित व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। अतः इन्हें मुख्यधारा में लाना सबसे बड़ी चुनौती है।

महिलाएँ एड्स से ग्रसित होने के बाद भावनात्मक उथल–पुथल की शिकार हो जाती है। अतः इन्हें विशेष तौर पर भावनात्मक समर्थन देकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ना चाहिए और इनके स्वास्थ्य के लिए विशेष प्रबंध करना चाहिए।

उपरोक्त समस्याओं को दख्े ाते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण समिति का गठन किया एवं हरके राज्य में भी केन्द्रीय योजना के तहत 'राज्य एड्स नियंत्रण समिति' का गठन किया गया। इसी के आलोक में गुजरात में भी 'गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण समिति' कार्य कर रही है। ये समिति पूरे राज्य में एड्स के प्रति लोगों में जागरूकता फलै ाने एवं इस बीमारी से लड़ने के लिए लोगों को प्रेरित कर रही है। अमरेली जिला में भी इस समिति के द्वारा अनके कार्यक्रमों का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

एड्स जैसी घातक बीमारी के लिए कहीं–न–कहीं वेश्यावृति सबसे ज्यादा जिम्मेवार दिखता है और इस व्यापार के पीछे महिला–पुरुष, भेदभाव, निर्धनता, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की कमी, महिलाओं को रोजगार के कम अवसर और सबसे बड़ी बात आजीविका एवं स्वतत्रं ता के विकल्पों का न होना एवं आज के दौर में भोगवाद की बढ़ती प्रवृति सबसे ज्यादा जिम्मेवार है। भारत सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय ने 'महिलाओं और एच.आई.वी.' के माध्यम से विभिन्न मंचों पर एड्स के बारे में जागरूकता और चेतना लाने तथा समस्या के समाधान और सावधानी से संबंधित ज्ञान का प्रचार–प्रसार देश के विभिन्न भागों में किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे का है। इसका सीधा असर इनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। अमरेली जिला के ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि उदारवाद एवं वैश्विक परिकल्पना का स्वरूप यहाँ नहीं दिखाई पड़ रहा है। यहाँ आज भी पारम्परिक एवं रूढिव् ादिता के आधार पर ही महिलाओं का स्वास्थ्य निर्भर है। एक स्वस्थ और सभ्य राष्ट्र का निर्माण तभी हो सकता है जब उस राष्ट्र की महिलाएँ और बच्चे स्वस्थ, सुशिक्षित और मानसिक रूप से सुदृढ़ हो। भारत जैसे देश एवं गुजरात जैसे राज्य के लिए यह बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि आज भी 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती हे एवं उसकी आबादी महिलाएँ ही हैं, जो श्रद्धा के पात्र तो हैं ही अच्छे जीवन की हकदार भी हैं।

संदर्भ सूची

1. अहुजा, आर.ः 'सामाजिक समस्याएँ' रावत पब्लिशर्स, जयपुर, 1991, पृ.—177
2. हैरिस, सी.सी.ः दी फैमली, 1969, पृ.—70
3. बोगार्डस : द डबलपमेंट ऑफ सोशल थाउफट्स, पृ. —239—40
4. एस.सी.ई.आर.टीः द वुमेन ऑफ गुजरात, अमरेली, 1989, पृ.—12
5. भारत, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2005, पृ.—609
6. पूर्वोक्त, पृ.—609
7. कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2007

Prof. B. B. Gohil
Associate Professor
Smt. B. V. Dhanak Arts, Commerce, Science and Management College
Bagasara (Dist. Amreli)